Foreign Policy of F. D. Rooswelt :-

F. D. Rooswelt अमेरिका के इतिहास में निसंदेह एक महान राष्ट्रपति के रूप में विख्यात है। उसने अत्यन्त ही संकट की घड़ी में अमेरिकी राष्ट्र का सफलता पूर्वक नेतृत्व किया। यू कहा जाय कि अमेरिका के कुछ अन्य असाधारण राष्ट्रपतियों की तरह रूजवेल्ट का व्यक्तित्व प्रभावोत्पादक है। अमेरिकी राष्ट्र का सफल नेतृत्व उसने आर्थिक मंदी तथा द्वितीय विश्व युद्ध जैसी महान संकट की स्थिति में किया। और इस दृष्टि से उसकी तुलना Washington, Lincon, तथा trueman से की जा सकती है। वस्तुतः उसका शासन काल प्रगतिशील आन्दोलन की चरम परिणति थी। उसके सम्बन्ध में किसी को पहले यह उम्मीद नहीं थी कि अमेरिकी इतिहास में अब्राहम लिंकन और Woodro Wilson की तरह राष्ट्रीयता एवं लोकतंत्र के प्रति आस्था के कारण रूजवेल्ट इतना प्रसिद्ध हो जायगा।

जहां तक वैदेशिक नीति का प्रश्न है अमेरिका ~~से~~ प्रथम विश्व युद्ध के बाद से ही तटस्था एवं अलगाव के नीति के पक्ष में था। घोर आर्थिक मंदी के कारण भी अमेरिकी जनता वैदेशिक मामलों में अधिक चहल पहल नहीं करना चाहती थी। राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने यह अनुभव कर लिया ~~कि~~ था कि उसे यूरोप की सम्पूर्ण गुटबंदी से दूर रहकर अपनी समस्याओं के समाधान में ही व्यस्त रहना चाहिए। प्रो० चार्ल्स बियर्डस भी इस मत के पोषक थे तथा Stuart chage, ओस्वार, जी० ~~डी~~ ईवेर्स, हारनसंढी, रावर्ट सलूर, तथा जॉन डास पैसज जैसे लेखकों ~~एवं~~ एवं पत्रकारों ने भी इस अलगाव की नीति का समर्थन किया और इस तरह Rooswelt की वैदेशिक नीति पर अमेरिकी जनता की मनोदशा हावि थी।

वस्तुतः अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में ~~से~~ आरम्भ से ही अमेरिकी सरकार का प्रमुख्य उद्देश्य युद्ध ~~से~~ से अलग रहना था। था युद्ध में घसीटे जाने से किसी भी सम्भावना से बचना रहा था। 10 जनवरी अमन ~~एक~~ डाईलों को कम करने की नीति का अनुसरण

करते हुए उसने फिलिपाइन्स से जो पश्चिमी प्रशान्त महासागर में एक मात्र अमेरिकी सैनिक अड्डा था, हट जाने तथा इन द्वीपों को 10 वर्षों की परिवीक्षा अवधि के बाद पूर्ण स्वतंत्रता देने का निश्चय किया था। 1935 ई० में तटस्था अधिनियम का पारित होना भी इस निश्चय के समान ही महत्वपूर्ण था। इसके अनुसार युद्ध भड़कने की स्थिति में अमेरिकी राष्ट्रपति को युद्ध सामग्री तथा मूल उत्पादनों के निर्यात पर रोक लगाने का अधिकार मिल गया था। अमेरिकी राष्ट्रपति ने इस अधिकार का उपयोग इटली, अबिसीनिया युद्ध में भी किया था। फरवरी 1936 ई० में इस अधिनियम में एक संशोधन के अनुसार यह रुकावट भावि युद्ध में न केवल ऐच्छिक बल्कि अनिवार्य हो गयी। इस संशोधन के अनुसार युद्धरत पक्षों को रिण दिये जाने पर भी रोक लगा दी गयी। किन्तु महत्वपूर्ण बात यह थी कि इस अधिनियम से अमेरिकी गणतंत्र को मुक्त रखा गया था।

Roosevelt United state को यूरोप तथा सुदूर पूर्व की झंझटों से अपने आपको अलग रखने के कोशिश के साथ ही साथ अन्य अमेरिकी देशों के अधिकाधिक निकट आने की इच्छा भी उतनी ही प्रबल थी। मध्य और दक्षिणी अमेरिका के देशों में United state के प्रति परंपरागत अविश्वास कई वर्षों से चला आ रहा था। मुनरो सिद्धान्त का यह व्यापक अर्थ लगाया था कि व्यवस्था बनाये रखने और विदेशी जान माल की रक्षा करने के लिए आवश्यकता पड़ने पर मध्य और दक्षिणी अमेरिका के मामलों में हस्तक्षेप करना उसका अधिकार है। इस प्रकार क्यूबा और United state के बीच की गयी संधि के द्वारा United state को इन प्रयोजन के लिए हस्तक्षेप करने का स्पष्ट अधिकार दिया गया। United state की नौ-सैनिक निकारागुआ में उस थोड़े समय को छोड़कर 1912 से ही तथा हैटी में 1915 से ही रहे थे। तथा अन्य देशों में भी कुछ कम स्थाई हस्तक्षेप किया गया था। समय-समय पर होने वाले अखिल अमेरिकी महासभाओं से जिनमें से प्रथम 1889 ई० में हुई थी कि वह दुर्भावना दूर भी नहीं

सका था जो इस नीति के परिणाम स्वरूप हुई जिसको शक्ति प्रदर्शन और power सामाज्यवाद के नाम से वर्णित किया जाता था।

1933 के ~~प्रारंभिक~~ प्रारंभ से ही राष्ट्रपति रुजवेल्ट ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा था कि यह राष्ट्र अच्छे पड़ोसी के नीति पर चलेगा। यही उसकी वैदेशिक नीति की प्रधान कुंजी थी। इस घोषणा के आधार पर लोगों ने यह अर्थ लगाया था कि अमेरिका का परंपरागत रुख निश्चित रूप से बदल गया है। इसी समय अर्जेनटाइना गणतंत्र ने एक नये समझौता की चर्चा चलाई, जिसके अनुसार आक्रमणात्मक युद्ध का त्याग तथा शक्ति के प्रयोग से उत्पन्न स्थितियों को अमान्य करने की व्यवस्था करनी थी। अमेरिका ने उसका स्वागत किया। अमेरिका तथा कुछ यूरोपीय राज्यों ने उस पर हस्ताक्षर भी किया। 1933 ई० के अन्त में Monte Video में हुई सातवीं अखील अमेरिकी महासभा में अमेरिका के राज्य सचिव ने एक सान्त्वनाप्रद घोषणा की। परिणामतः अमेरिका के जहाज हैटी से अंतिम रूप से हट गये और क्यूबा से की गयी संधि भी रद्द कर दी गयी।

1936 के अपने पुनर्निर्वाचन के सिघ बाद ही राष्ट्रपति रुजवेल्ट ने क्यूबा से सपर्क में हुई आठवीं अखील अमेरिकी महासभा में स्वयं उपस्थित होकर लैटिन अमेरिका को सम्मानित किया। इस महासभा में एक संधि द्वारा यह व्यवस्था की गयी कि यदि किसी भी अमेरिकी गणतंत्र की शांति को कोई खतरा उत्पन्न हुआ तो हस्ताक्षर कर्ता "शांतिपूर्ण सहयोग के कदम उठाने पर परस्पर परामर्श करेंगे।" फलतः 1930 के बाद के दसक में हुए युद्धों के बावजूद भी जिन्होंने दक्षिणी अमेरिका को विकृत कर दिया। अमेरिका महाद्विपो में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध इतना मित्रतापूर्ण कभी भी नहीं रहे थे, जितने कि इस समय हो गये।

इसी बीच अमेरिकी गणतंत्रों में अधिकाधिक मेल कराने और उन्हें अन्य राष्ट्रों की युद्धों में फसने से बचाने की प्रवृति अमेरिका के नेतृत्व में जारी रही। जहां तक तटस्थ बनाये रखने की प्रवृ

के लिए और भी कानून बन चुके थे। 1937 में नया तटस्थता अधिनियम स्वीकृत हुआ। उसने सामान के निर्यात और आयात रिजों पर पुनः रोक लगा उसके अनुसार वाणिज्य पोतों पर शस्त्र रखने तथा अमेरिकी नाविकों को किसी भी युद्धरत राष्ट्रों के जहाजों में यात्रा करने की मनाही कर दी गयी। क्योंकि उनके नाविकों को नुकसान पहुंचने से अमेरिका भी सम्भवतः युद्ध में शामिल होना पड़ सकता था। अधिनियम के अनुसार राष्ट्रपति को अपने विवेक के अनुसार युद्धरत राज्यों का माल अपने अमेरिकी जहाजों में निर्यात करने का निषेध करने का अधिकार मिल गया था किन्तु कैश एण्ड कैरीज (दाम चुकाओ और ले जाओ) के सिद्धान्त पर अन्य देशों के निवासी सामग्री का मूल्य चुकाकर उसे अपने जहाजों में ले जा सकते थे।

जो भी हो यूरोप में राजनीतिक दाईत्वों से बचने का संकल्प का अर्थपूर्ण लगाव नहीं था। अन्य महाद्वीपों के समान यूरोप से आर्थिक सहयोग की नीति पर चलने के लिए अमेरिकी लोकमत लगभग निर्विरोध रूप से तैयार थी। "पारस्परिक व्यापार समझौता अधिनियम (Reciprocal trade Agreement Act) का पूरा लाभ उसका सचिव कार्डिल हॉल ने उठाया। यह लाभ उसने सर्वाधिक अनुग्रहीत राष्ट्र (Most feher Nation close) के आधार पर बाईस राष्ट्रों से उठाया, जिनसे अमेरिका का अधिकांश विदेशी व्यापार होता था, जिसमें पारस्परिक आधार पर सीमाकर में कमी तथा व्यापार पर लगाये गये अन्यबन्धनों को सीमित करना शामिल था। उनका यह विश्वास था कि राजनीतिक संकट उत्पन्न करने में राष्ट्रीयता एक कारण था, और यदि उचित सीमाकर संरक्षण के साथ सुसंगठित यथा संभव निर्वाह आधार यह बहुपक्षीय व्यापार बहुपक्षीय व्यापार प्रारम्भ किया जाय तो वह केवल राजनीतिक और प्रादेशिक पुनरावृति रोकने में अधिक उपयुक्त हो सकेगा।

परंतु सुदूरपूर्व में अमेरिका ने 1934-37 की अल्पीकृत दाईत्वों संबंधी नीति के विरुद्ध प्रतिक्रिया प्रगट किया। अमेरिकी राष्ट्रपति ने जानबूझकर यह स्वीकार करने से बचने का प्रयत्न किया कि चीन में जापान की कार्यवाही युद्ध की स्थिति है। क्योंकि ऐसी स्वीकृति

तटस्था अधिनियम के उपबन्ध लागू की जाएं और चीन को अमेरिकी सहायता बन्द कर देनी पड़ती। संघर्षरत चीनियों के प्रति स्पष्ट रूप से सहानुभूति दर्शाया गया तथा आयात, निर्यात बैंक के जरिये उन्हें ऋण दिये जाय। अमेरिका की सरकार ने चीन में अपनी किन्हीं भी परंपरागत अधिकारों को छोड़ने से दृढ़तापूर्वक इन्कार कर दिया और चीनी संधि बन्दरगाहों तथा समुद्र में अपनी नौ-सेना एवं ~~थल से~~ थल सेना की पूरी शक्ति कायम रखी। 1940 में जापान अमेरिका वाणिज्य संधि को समाप्त कर दी गयी। अमेरिका और जापान के बीच वाणिज्य संबंध Day-to-Day के आधार पर चलते रहे, और Congress तथा देश के प्रभावशाली दलों द्वारा जापानी आयात पर रोक या विभेदात्मक चुंगी लगाने की जोरदार मांग की ~~गयी~~ स्वीकृति की भय से जापान ने अमेरिकी अधिकारों का विशेष अतिक्रमण नहीं किया। 1940 में फिलीपाइन्स को विधिवत पूर्ण स्वतंत्रता दी जाने वाली थी। उसके विरुद्ध भी दोनों देशों में आन्दोलन जोर पकड़ रहा था। जिस समय तक फिलिपीन्स व्यापार को सहानुभूति पूर्वक सुविधाएं दी जानी थी, उसमें वृद्धि कर दी गयी तथा राजनीतिक एवं सैनिक शासन की समाप्ती की व्यवस्था करने के लिए बनाये गये अधिनियम में संशोधन किया गया।

इस प्रकार रूजवेल्ट की अच्छे पड़ोसी की नीति बहुत हद तक सफल रही। तथा द्वितीय विश्वयुद्ध के समय उसके प्रशासन को लैटिन अमेरिकी देशों का व्यापक समर्थन उन्हें प्राप्त हुआ। परंतु बाद में जैसे-2 अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति बिगड़ती गई रूजवेल्ट स्वयं इसके लिए दृढ़ प्रतिज्ञ हो गया कि बाहरी विश्व में जो घटनाएं घट रही है उनकी वास्तविक हालत में अमेरिकी ~~जनता~~ जनता को सतर्क किया जाय। अमेरिका को नैतिक और सैनिक दृष्टि से सुसज्जित किया जाय तथा विरोधी शक्तियों का मुकाबला कर इन्हें पराजित किया जाय। इसी के परिणाम स्वरूप ~~से~~ 1937 में शिकागो में भाषण देते हुए उन्होंने आक्रामक राष्ट्रों के विरुद्ध नैतिक घेरेबन्दि का सुझाव दिया जिसकी प्रतिक्रिया यह हुई ~~कि~~ कि इसपर राजनीतिक चाल चलने

का आरोप लगाया गया। और जो कुछ भी हो रूजवेल्ट ने चीन में जापानी आक्रमण की घोर भर्त्सना की। इन्होंने अमेरिकी देशों और कनाडा के साथ मैत्री संबंधी दृढ़ किये तथा कांग्रेस को प्रभावित किया कि राष्ट्र की सुरक्षा के लिए शस्त्रों पर अधिक व्यय की स्वीकृति दी जाय। इतना ही नही उन्होंने तानाशाही राष्ट्रों को चुनौती दी, और कहा कि भय जनक शांति भी तलवार के नीचे शांति से अधिक श्रेष्ठ नही होती है। उन्होंने भय के सामने झुक जाने से तथा शक्ति के सामने घुटने टेकना अस्वीकार कर लिया। इसी के परिणाम स्वरूप जैसे-2 तानाशाही नीति अधिक आक्रामक होने लगी। अमेरिकी भावना भी उसके विरुद्ध अधिक कठोर होने लगी, और इसका परिणाम द्वितीय विश्व युद्ध का विनाश था।